श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com


श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.


श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.


श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.


श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

अक्टूबर - द्वितीय, अंक - 30 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

शिव संदेश

वास्तविक ज्ञान

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.



क्या है ज्ञान? ज्ञान की हमें क्यों आवश्यकता है? सर्वप्रथम तो यह जान लेना आवश्यक है कि जिसे आज तक हमने ज्ञान के नाम पर संगृहीत किया है वह ज्ञान नहीं है। ज्ञान के नाम पर आप किताबों का लिखा और श्रुतियों का सुना अपनी स्मृति पर संचित करते रहे हैं। पर स्मरण रखें, जो बाहर से संचित किया जाए वस्तुतः वह ज्ञान नहीं है। ज्ञान कभी संचित और आहृत नहीं किया जा सकता है। ज्ञान को तो जागृत किया जाता है। आप स्वयं ज्ञान रूप हैं। अनन्त ज्ञान के महानद आपकी आत्मा के गर्भ में बह रहे हैं। उन्हें जन्म देना है। उन्हें प्रगट करना है।

भगवान महावीर ने जिस ज्ञान की बात कही है उस ज्ञान का अर्थ है कि आप स्वयं को पहचान लें। आपके भीतर स्मृति जग जाए अपने स्वरूप की। आत्मस्मरण ज्ञान है। आत्मविस्मरण अज्ञान है। जो जो साधन आपको आत्मविस्मरण में ले जाते हैं वे सब अज्ञान है। आप ज्ञान के नाम पर इतना कुछ बाहर से संगृहीत कर लेते हैं कि उस संग्रह के आवरणों से आपकी आत्मा दब जाती है।

अक्सर मैं बड़े-बड़े विद्वानों को देखता हूं। उन्हें बहुत कुछ स्मरण होता है। बहुत-सी भाषाएं वे जानते हैं। परंतु आत्मानुभव के तल पर वे एकदम कोरे होते हैं। इतनी जानकारियाँ वे संगृहीत कर लेते हैं कि उन जानकारियों के तले आत्मतत्व की जानकारी की बात गौण हो जाती है। अपने सिवाय वे सब जान लेते हैं। परंतु मैं कहता हूं, आत्म-ज्ञान के बिना समस्त बाह्य-ज्ञान भार है। उस भार से आपको सम्मान मिल सकता है पर कल्याण नहीं मिल सकता है। उससे आपको सुख साधन मिल सकते हैं पर आत्मशांति नहीं मिल सकती है।

ज्ञान का अर्थ है आत्मस्मरण। आत्मस्मरण ही मोक्ष है और आत्म विस्मरण ही संसार है। आत्मस्मृति के क्षण में आप परमात्मा हैं और आत्मविस्मृति के क्षण में आप संसारी हैं। आप मोक्ष को साधने के लिए बड़ी-बड़ी साधनाएं करते हो। परमात्मा को पाने के लिए कितने-कितने उपाय और अनुष्ठान करते हो। परंतु मेरी दृष्टि में कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। मोक्ष को साधने और परमात्मा को उपलब्ध होने का सीधा-सा ढंग है कि आप अपने को पहचान लें। क्योंकि आप स्वयं परमात्मा हैं। अपने को पहचानना भर है। आपकी स्मृति का जाग जाना पर्याप्त है। स्वयं के संदर्भ में जैसे ही आपकी स्मृति स्वच्छ बनती है वैसे ही आप पाते हो कि आप जहां खड़े हैं, आपके पगतलों के तले ही मोक्ष है।



अध्यक्षीय

अमृत महोत्सव वर्ष : गौरवशाली श्रमण परम्परा को नमन

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष E-mail : ajvk1973@gmail.com

श्रमण संस्कृति तप, त्याग, संयम, ज्ञान और साधना की ऐसी महान परम्परा है, जिसे हमारे पूज्य संत महापुरुषों ने अपने जीवन और पुरुषार्थ से निरंतर समृद्ध किया है। श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के इस गौरवपूर्ण अवसर पर अक्टूबर माह अनेक पूज्य संतों की जन्म जयन्ती, दीक्षा जयन्ती एवं पुण्य स्मृतियों से हमें इस महान विरासत का स्मरण करा रहा है।

15 अक्टूबर, आसोज शुक्ल चतुर्थी को उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री मूलमुनि जी महाराज की जन्म जयन्ती तथा 16 अक्टूबर को प्रवर्तक पूज्य श्री रमेश मुनि जी महाराज का स्मृति दिवस है। 18 अक्टूबर, आसोज शुक्ल सप्तमी को श्रमण संघीय सलाहकार पूज्य श्री सुमति प्रकाश जी महाराज की जन्म जयन्ती तथा 19 अक्टूबर, आसोज शुक्ल अष्टमी को उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री गौतम मुनि जी महाराज प्रथम का जन्म दिवस हमें उनकी साधना, ज्ञान और संघ-समर्पण से प्रेरणा लेने का अवसर प्रदान करता है।

21 अक्टूबर, आसोज शुक्ल दशमी एवं विजयदशमी का दिन भी अनेक मंगल प्रसंगों का सुंदर संगम है। इस दिन प्रवर्तक भण्डारी पूज्य श्री पदमचंद जी महाराज की जन्म जयन्ती, प्रवर्तक पूज्य श्री गणेश मुनि जी महाराज एवं उपाध्याय पूज्य श्री रवीन्द्र जी महाराज की दीक्षा जयन्ती तथा श्रमण संघीय सलाहकार पूज्य श्री तारकऋषि जी महाराज की जन्म जयन्ती है। इन सभी पूज्य संतों का जीवन हमें संदेश देता है कि धर्म केवल विचार नहीं, बल्कि आचरण और आत्मसाधना का मार्ग है। जन्म जयन्ती हमें उनके गुणों का स्मरण कराती है तो दीक्षा जयन्ती त्याग, संयम और आत्मविजय की महान श्रमण परम्परा से जोड़ती है।

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष में इन पावन प्रसंगों का महत्व और भी बढ़ जाता है। 75 वर्षों की यह गौरवपूर्ण यात्रा उन असंख्य संतों की तपस्या, त्याग और धर्म प्रभावना का प्रतिफल है, जिन्होंने श्रमण संघ की एकता एवं प्रतिष्ठा को निरंतर सुदृढ़ किया। आज हमारा दायित्व है कि इस अमूल्य विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाएँ। विशेषकर युवाओं को संतों के जीवन से अहिंसा, संयम, स्वाध्याय, व्यसनमुक्ति, सेवा और संघीय एकता की प्रेरणा मिले-यही अमृत महोत्सव की वास्तविक सार्थकता होगी। इन सभी पावन प्रसंगों पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से पूज्य संत महापुरुषों के श्रीचरणों में श्रद्धापूर्वक वंदन-अभिनंदन।

आइए, अमृत महोत्सव वर्ष में हम संकल्प लें कि संतों के आदर्शों को जीवन में उतारेंगे, संघीय एकता को सुदृढ़ करेंगे और श्रमण संस्कृति की गौरवशाली विरासत को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाएँगे।

सम्पादकीय

महावीर जी का प्रश्न : हम लड़ रहे हैं या महावीर की राह पर चल रहे हैं?

जैन तीर्थों के विवाद अब अदालतों से अधिक आत्ममंथन की मांग करते हैं!

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री



राजस्थान के सवाई माधोपुर स्थित श्री महावीर जी तीर्थ के प्रबंधन को लेकर श्वेतांबर और दिगंबर जैन परंपराओं के बीच वर्षों से चला आ रहा विवाद आज सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँच चुका है। राजस्थान हाईकोर्ट के 20 फरवरी 2026 के निर्णय के बाद दिगंबर प्रबंधकारिणी समिति ने सुप्रीम कोर्ट में SLP (C) Nos. 23209-23210/2026 दाखिल की। 9 सितंबर को सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुरक्षित रखते हुए दोनों पक्षों से लिखित दलीलें मांगीं।

लेकिन इस पूरे विवाद में मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण न्यायालय का कोई कानूनी प्रश्न नहीं, बल्कि न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला का वह सवाल है-"आप महान भगवान को क्यों परेशान कर रहे हैं? क्या भगवान इस मुकदमेबाजी से प्रसन्न होंगे?" यह सवाल केवल महावीर जी के मंदिर से जुड़े दोनों पक्षों से नहीं है। यह सवाल पूरे जैन समाज से है।

मैं स्वयं स्थानकवासी जैन परंपरा से आता हूँ, जहां मूर्ति-पूजा और मंदिर-परंपरा को धार्मिक साधना का अनिवार्य अंग नहीं माना जाता। इसलिए स्वाभाविक रूप से किसी मंदिर की पूजा-पद्धति अथवा प्रबंधन के विवाद में मेरा कोई संप्रदायगत हित नहीं है। लेकिन यही कारण है कि इस विषय पर मेरी चिंता और भी व्यापक है-यह विवाद किसी एक मंदिर का नहीं, जैन समाज की सामूहिक छवि और एकता का प्रश्न बन जाता है।

जब श्वेतांबर और दिगंबर समाज के लोग किसी तीर्थ के प्रबंधन, पूजा अथवा अधिकार को लेकर वर्षों तक न्यायालयों में आमने-सामने खड़े रहते हैं, तो बाहर का समाज हमसे यह पूछने का अधिकार रखता है कि जिस धर्म ने अनेकांत और सह-अस्तित्व की शिक्षा दी, उसके अनुयायी स्वयं अपने मतभेदों का समाधान क्यों नहीं खोज पा रहे?

सम्मेद शिखरजी हो, केसरियाजी हो, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ हो, महावीर जी हो अथवा अन्य प्राचीन जैन तीर्थ अलग-अलग स्थानों पर इतिहास, परंपरा, पूजा-पद्धति और प्रबंधन से जुड़े प्रश्न समय-समय पर सामने आते रहे हैं। हमें यह समझना होगा कि पूजा की पद्धति और प्रबंधन का अधिकार एक ही प्रश्न नहीं हैं। जहाँ संभव हो, दोनों परंपराओं की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुए ऐसी व्यवस्थाएं बनाई जा सकती हैं, जिनमें किसी की आस्था को चोट न पहुँचे और किसी प्राचीन परंपरा को अनावश्यक रूप से विस्थापित भी न किया जाए। (शेष पृष्ठ 5 में)

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन



समाजरत्न दानवीर मामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com



नरेश आनंदप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष - ज्ञान प्रकाश योजना
सदस्य - विश्वस्त मंडल
जैन कॉन्फ्रेंस



रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद
युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री कोमलमुनि जी म.सा.

मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल
चेयरमैन : श्री विजय जैन - पानीपत
वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन - मुंबई
समन्वयक : श्री जसवंत जैन - दिल्ली
सदस्यगण : डॉ. अमित राय जैन - बड़ौत, डॉ. अनामिका तलेसरा जैन - सूरत, श्री आनंदमल छल्लानी जैन - चेन्नई, श्री अंकुर जैन - दिल्ली, श्री अशोक रांका जैन - बेंगलुरु, श्री अतुल जैन - दिल्ली, श्री अविनाश चोरड़िया जैन - नई दिल्ली, श्री जे. डी. जैन - गाजियाबाद, श्री जयंती कुकड़ा जैन - सूरत, श्री कांति कुमार लोढ़ा जैन - औरंगाबाद, श्री कंवरलाल सूर्या जैन - भीलवाड़ा, श्री महावीर रांका जैन - चेन्नई, श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - दिल्ली, श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन - पाली, श्री पारस मोदी जैन - मुंबई, श्री प्रशांत जैन - दिल्ली, श्री रमेश भंडारी जैन - इंदौर, श्री रविन्द्रनाथ जैन - दिल्ली, श्री संजीव हीरालाल जैन - लुधियाना, श्रीमती संतोष जैन - दिल्ली, श्री शशिकांत पिंटू कर्नावट जैन - मालेगांव, श्री सुदर्शन जैन - दिल्ली, श्री विलास राठौर जैन - पुणे, श्री विनय जैन - पानीपत, श्री विनोद कीमती - हैदराबाद, श्री विपुल जैन - दिल्ली

संघ सम्मान ही आत्म सम्मान

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.



संघ शक्ति है, ऊर्जा है। अलग-अलग रहे तिनको से कचरा बनाता है और एकत्रित तिनको से कचरा साफ होता है। सूरज की बिखरी किरणें मात्र उष्मा देती है और वे ही परावर्तन से केन्द्रित होने पर ऊर्जा बनती है। प्रत्येक इकाई में रहने वाली योग्यता एकत्रित होने पर पूर्णता से प्रकट होता है। पदार्थ की यही व्यवस्था साधक जगत में भी लागू होती है। संघ यह साधक वर्ग की क्षमताओं के प्रकटीकरण का पारंपरिक अधिष्ठान है। संघ की विशेषताओं को नंदीसूत्र में भिन्न-भिन्न उपमाओं के माध्यम से उल्लेखित किया गया है। युगों के भवन, आगमों के रत्न, श्रद्धा का राजमार्ग, चारित्र के प्राचीर से सुशोभित, संघरूपी नगर है। संयम की धुनी, तप के आरे, सम्यक्त्व की परिधि युक्त अन्य चक्र से अपराजित संघ रूपी चक्र है।

संघ के महिमा वर्णन, गुण दर्शन उद्देश्य है संघ की गरीमा का बोध होना। संघ का सम्मान जिनेश्वर देव का सम्मान है। तीर्थंकर परमात्मा का, अनंत सिद्धों का सम्मान है। जिन शासन प्रभावक महान आचार्य परम्परा का, श्रुतधर, बहुश्रुत, वाचना प्रमुख महापुरुषों का सम्मान है। संघ का सम्मान तीर्थंकर गणधरों द्वारा प्ररूपित आगम का, आज्ञा का सम्मान है। संघ के सम्मान से साधना में शुद्धता, दृढ़ता, पवित्रता, तेजस्विता वृद्धिंगत होती है। इसी मंगलमय भावना से हमारे पूर्वाचार्यों ने अलग-अलग सम्प्रदाय के रूप में विकीर्ण (बिखरी हुई) स्थानकवासी परम्परा के समान आचार विचारधारा के परम्पराओं को श्रमण संघ के रूप में एकत्रित किया। एक समाचारी एक आचार्य की व्यवस्था को स्वीकारने हेतु उदार-उदात्त भावना से अपने पद, वर्चस्व, अधिकार का विसर्जन किया।

आज इसी दूर दृष्टि पूर्ण तथा त्यागपूर्ण बलिदान का यह फल हमारी आज की पीढ़ी को प्राप्त हो रहा है। उत्तर से दक्षिण तक हजारों क्षेत्रों में रहने वाले परिवार श्रमण संघ के उस गरिमामय परंपरा से जुड़े है। हमारे संघ के प्रत्येक सदस्य का दायित्व है अपने उन गुरुदेवों के बलिदान का महत्व जानकर संघ की गरिमा, संघ के सम्मान को अक्षुण्ण रखने हेतु कटिबद्ध होने का, रहने का। श्रमण संघ से अलग रही तथा अलग हुई दोनों की परम्पराएं श्रमण संघ के उन महापुरुषों की दुहाई देकर आज श्रमण संघ के परम्परागत परिवारों को साम्प्रदायिक घेरे में जकड़ने के लिए प्रयासरत है।

श्रमण संघ में सरलता का विशेष संस्कार है। इस कारण अनेकों बार सामान्य बातें भी दूसरे लोगों के लिए जनता में भ्रम फैलाने हेतु अधिक काम आती है। आज अनेकों नये साधक वर्ग द्वारा श्रमण संघ में प्राप्त स्वतंत्रता, स्वायत्ता का दुरुपयोग होता दिखाई दे रहा है। हम अपनी मर्यादाओं का ध्यान स्वयं नहीं रखेंगे तो वे हमारे विषय में दुष्प्रचार, विषैल प्रचार में सहायक बनती है। हम कई बार अनजाने में अपनी आधुनिकता अथवा साहसिकता के आवेष में अकरणीय, अशोभनीय कार्य करते है। टेक्नालॉजी के इस युग में 'हम किसी के कम नहीं' यह मानसिकता साधक वर्ग में बढ़ती जा रही है। यह हमारे लिए धर्म प्रचार का कम अप-प्रचार का अधिक कारण बन रही है। श्रद्धा की अभिवृद्धि की बजाय अश्रद्धा को पनपा रही है। किसी विशिष्ट व्यक्ति की भेले पूरे संघ को प्रश्नचिन्ह के कटघरे में खड़ा कर रही है।

आज पूरे भारत वर्ष में जितनी जैन परंपरा है उन सभी के श्रमण संघ एक ऐसा संघ है, जिसमें सर्वाधिक पी.एच.डी. के स्नातक है ऐसा कहा जाता है। आज हमारी इन प्रतिभाओं का सम्मान, उपयोग श्रमण संघ की गरिमा, अभिवृद्धि में होना चाहिए। ज्ञानी-त्यागी-तपस्वी प्रतिभाशाली अनेक विविध शक्तियाँ श्रमण संघ में है। उनके क्षमता की प्रस्तुति सही तरीके से हो। संघ का गौरवशाली इतिहास लक्ष्य में लेकर वर्तमान में क्षुद्र बातों को छोड़ हम अपनी क्षमताओं का उपयोग संघ विकास, संघ के उज्जवल भविष्य के लिए करें यह हमारा लक्ष्य बने। हमारे संघ की समस्त प्रतिभाओं से, नई ऊर्जाओं से हार्दिक विनम्र आग्रह है कि सोशल मीडिया के मोह को छोड़ प्रत्यक्ष में उपलब्ध अवसरों को अधिक महत्व दें। संघ का सम्मान हम सभी का सम्मान है। संघ के सम्मान को आघात न पहुँचे इसका हम ध्यान रखें तथा संघ के किसी भी सदस्य को कोई आँच न आए इस हेतु जागृत रहे।

पचहत्तर वर्ष होना केवल संख्या नहीं होती



- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा.

पचहत्तर वर्ष...! कहने को केवल एक संख्या है। लेकिन जरा ठहरकर सोचिए, क्या किसी संघ के जीवन में पचहत्तर वर्ष केवल कैलेंडर के पन्ने होते हैं? नहीं। किसी वृक्ष से पूछिए पचहत्तर वर्ष क्या होते हैं। वह कहेगा, कुछ आँधियाँ, कुछ पतझड़, बहुत-सी धूप और फिर भी हर बार नई कोंपलें निकालने का साहस।

किसी नदी से पूछिए पचहत्तर वर्ष क्या होते हैं? वह कहेगी, रास्ते में कितने पत्थर आए, इसका हिसाब नहीं रखा, बस इतना याद रखा कि मुझे बहते रहना है और यदि श्रमण संघ से पूछें कि पचहत्तर वर्ष क्या होते हैं? तो शायद उत्तर आएगा-ये पचहत्तर वर्ष केवल समय नहीं हैं।

कहीं किसी संत की तपस्या हैं, कहीं किसी साध्वी की साधना हैं। कहीं किसी श्रावक की श्रद्धा है, कहीं किसी कार्यकर्ता का मौन समर्पण है। कहीं किसी माँ के दिए संस्कार हैं और कहीं किसी युवा के मन में पहली बार जगा धर्म का प्रश्न है। इसीलिए श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष केवल उत्सव नहीं है।

शब्द पर ध्यान दीजिए-"अमृत"। अमृत वह नहीं जो केवल स्वयं को जीवित रखे। अमृत वह है, जिसकी एक बूंद अगली पीढ़ी को भी जीवन दे जाए। इसलिए प्रश्न यह नहीं है कि इन पचहत्तर वर्षों में हमें क्या मिला। प्रश्न यह है कि-अगले पचहत्तर वर्षों के लिए हम क्या छोड़कर जा रहे हैं? क्या हम अपनी अगली पीढ़ी को केवल श्रमण संघ का इतिहास बताएँगे, या उसके भीतर श्रमण संस्कृति का संस्कार भी जगाएँगे? क्या भगवान महावीर की तस्वीर उनके घरों में होगी, या उनकी अहिंसा उनके व्यवहार में भी होगी? क्या संतों के प्रवचन केवल मोबाइल में सुरक्षित रहेंगे, या उनका एक वाक्य भी जीवन में उतरेगा? अमृत महोत्सव का अर्थ तभी पूरा होगा, जब उत्सव के साथ उत्तरदायित्व भी जागे।

75 वर्ष पूरे हो रहे हैं-यात्रा पूरी नहीं हो रही है। अब मशाल हमारे हाथ में है। हमारे पूर्वज जहाँ तक इसे लेकर आए, वहाँ से आगे ले जाने की जिम्मेदारी हमारी है। बस इतना ध्यान रहे-मशाल हाथ बदलते समय बुझनी नहीं चाहिए, परम्परा पीढ़ी बदलते समय टूटनी नहीं चाहिए और संघ समय बदलते समय बिखरना नहीं चाहिए। यही अमृत महोत्सव है।

अतीत को प्रणाम, वर्तमान को पुरुषार्थ और भविष्य को संस्कार देने का अवसर और जिस दिन हमारी नई पीढ़ी गर्व से कहेगी-"यह केवल हमारे पूर्वजों का संघ नहीं, यह हमारा भी संघ है," उस दिन समझिएगा कि हमने अमृत महोत्सव केवल मनाया नहीं है, जीया है।



J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन


चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव : 'स्किल इंडिया' योजना



श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की 'स्किल इंडिया' योजना- समाज के पहले 75 पंजीकृत युवाओं व महिलाओं को 50 प्रतिशत छात्रवृत्ति पर कौशल विकास का सुनहरा अवसर

गत 120 वर्षों से निरंतर निःस्वार्थ समाज सेवा के पथ पर अग्रसर अग्रणी राष्ट्रीय संस्था श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस ने श्रमण संघ के अमृत महोत्सव 75 वर्ष के पावन अवसर पर एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। संस्था द्वारा स्थानकवासी जैन समाज के युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु 'स्किल इंडिया' योजना का शुभारंभ किया गया है।

इस विशेष पहल के अंतर्गत समाज के 75 युवाओं एवं महिलाओं को 3 से 6 माह की अवधि वाले विभिन्न कौशल विकास (Skill Development) पाठ्यक्रमों के लिए 50 प्रतिशत कोर्स फीस छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाएगी।

समाज पर पड़ने वाला दूरगामी एवं सकारात्मक प्रभाव (Social Impact) : 120 वर्षों के गौरवशाली इतिहास को आगे बढ़ाते हुए जैन कॉन्फ्रेंस की यह योजना समाज में निम्नलिखित क्रांतिकारी बदलाव लाएगी :-

✲ महिला सशक्तिकरण व वित्तीय स्वतंत्रता : गृहणियों और युवतियों को हुनरमंद बनाकर उन्हें घर बैठे या स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलेगा, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

✲ युवाओं का सुरक्षित भविष्य : 3 से 6 महीने के जॉब-ओरिएंटेड स्किल कोर्स के माध्यम से युवा आधुनिक तकनीकों, डिजिटल स्किल्स और व्यावसायिक दक्षता में निपुण होकर रोजगार प्राप्त कर सकेंगे।

✲ परिवारों पर आर्थिक बोझ में कमी : 50 प्रतिशत फीस का सहयोग मिलने से मध्यम एवं जरूरतमंद परिवारों के बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले व्यावसायिक पाठ्यक्रम आसान हो जाएंगे।

✲ स्वावलंबी एवं संगठित समाज : समाज की युवा पीढ़ी और नारी शक्ति जब स्वयं के पैरों पर खड़ी होगी, तो संपूर्ण जैन समाज आर्थिक, सामाजिक और मानसिक रूप से और अधिक सशक्त बनेगा।

योजना की मुख्य विशेषताएं : **50** प्रतिशत फीस सहयोगः पहले पंजीकृत 75 लाभार्थियों की कुल कोर्स फीस का 50 प्रतिशत सहयोग श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस वहन करेगी।

पाठ्यक्रम अवधि : 3 महीने से 6 महीने तक के मान्यता प्राप्त वोकेशनल व स्किल डेवलपमेंट कोर्स।

पात्रता : स्थानकवासी जैन समाज के प्रतिभावान युवा एवं महिलाएं।

आवेदन हेतु आवश्यक दस्तावेज (Checklist) : आवेदक पंजीकरण से पूर्व निम्नलिखित दस्तावेजों की प्रति तैयार रखें:

1. पहचान एवं आयु प्रमाण, **2.** जैन स्थानकवासी समाज प्रमाण, **3.** कोर्स एवं संस्थान विवरण : मान्यता प्राप्त संस्थान का प्रवेश पत्र (Admission Letter) एवं 3-6 माह के कोर्स की फीस रसीद/विवरण। **4.** बैंक विवरण : संस्थान का बैंक खाता, सहयोग राशि सीधे संस्थान के खाते में आएगी, **5.** अन्य : पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ एवं मोबाइल नंबर/ईमेल आईडी।

ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया : इच्छुक युवा एवं महिलाएं जैन कॉन्फ्रेंस की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं : पंजीकरण लिंक :
https://jainconference.org/SkillIndiaRegistration.aspx

अपील : जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों ने समाज के सभी श्रीसंघों, परिवारों, युवाओं और नारी शक्ति से आह्वान किया है कि वे 12 दशक पुरानी इस प्रतिनिधि संस्था की स्वर्ण पहल से जुड़कर अमृत महोत्सव के अवसर पर स्वावलंबन के इस महाअभियान का अधिकतम लाभ उठाएं। – अमृत महोत्सव आयोजन समिति

दो उत्सव, एक ही संग 'करवा चौथ एवं दिवाली मेला 2026'



श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा, नई दिल्ली के दिशा निर्देशन में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली प्रदेश द्वारा करवा चौथ एवं दिवाली मेला 2026 का भव्य आयोजन किया जा रहा है। यह मेला परंपरा, संस्कृति और खुशियों का अद्भुत संगम होगा। जिसकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन-राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन एवं राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन को प्राप्त है।

मेले के मुख्य आकर्षण : ट्रेड स्टॉल, फ्री मेहंदी, सेल्फी पॉइंट, फोटोग्राफी प्रतियोगिता, लकी ड्रा, आकर्षक उपहार, त्योहारों की रौनक, खरीदारी का आनंद और परिवार के साथ यादगार पल होंगे। यह कार्यक्रम दिनांक 24 अक्टूबर 2026, शनिवार को प्रातः 10:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक श्री वर्धमान जैन महिला संघ, सेक्टर-3, रोहिणी, पॉकेट H-34, निकट श्री जैन स्थानक, सेक्टर-3, रोहिणी व डिस्ट्रिक्ट पब्लिक स्कूल में किया जाएगा। इसके आयोजक श्रीमती रीचा जैन-राष्ट्रीय महिला महामंत्री, श्रीमती उर्मिल जैन-राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा, श्रीमती सीमा जैन-प्रांतीय महिला अध्यक्षा - 9136371027, श्रीमती कनिका जैन-प्रांतीय महिला महामंत्री - 9654973690, श्रीमती शालू जैन-प्रांतीय मानव योजना सेवा अध्यक्षा - 921570498 है। आइए, साथ मिलकर इन पावन त्योहारों को बनाएं और भी खास। – राष्ट्रीय महिला शाखा

अमृत महोत्सव के कार्यक्रमों को लेकर बैठक सम्पन्न



चेन्नई (तमिलनाडु) : 2 अक्टूबर शनिवार को देशभर में जारी श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव कार्यक्रम वर्ष के अंतर्गत तमिलनाडु में परमार्थ सेवा एवं विभिन्न रचनात्मक कार्यों की रूपरेखा पर चर्चा हेतु जोन-एक समन्वयक श्री सुरेश लुणावत जैन की सार्थक पहल पर ए.एम.के. एम. परिसर में बैठक आयोजित हुई।

आगामी तीन जनवरी में गुरु मरूधर केसरी पुण्य स्मृति दिवस सहित अन्य सेवा कार्यक्रमों के आयोजन एवं समयबद्ध क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श किया गया। बैठक में जैन कॉन्फ्रेंस के प्रांतीय चेयरमैन श्री गौतमचंद कटारिया जैन, प्रांतीय अध्यक्ष श्री धर्मीचंद तालेड़ा जैन, महिला अध्यक्षा श्रीमती संगीता बांठिया जैन एवं युवा अध्यक्ष श्री मनीष रांका जैन सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। श्री गौतमचंद कांकरिया जैन, श्री मदनलाल गुंदेचा जैन, श्री अशोक गेलडा जैन, श्री जब्बरचंद खिंवसरा जैन एवं श्री आनन्द चुतर जैन सहित अनेक वक्ताओं ने महोत्सव के संदर्भ में अपने विचार रखे। सभी ने एक स्वर में श्रमण संघ के गौरवशाली इतिहास का स्मरण करते हुए संघ की एकता में अभिवृद्धि परमार्थ सेवा एवं रचनात्मक कार्यों के माध्यम से इसे प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने का आह्वान किया। आगामी समय में विस्तृत चर्चा और आपसी सहमति से कार्यक्रमों की रूपरेखा तय कर उन्हें क्रियान्वित करने की भावना तथा आगामी समय में सादड़ी राजस्थान व दिल्ली में आयोजित श्रमण संघ अमृत महोत्सव के प्रमुख कार्यक्रमों में सहभागिता देने के साथ बैठक सम्पन्न हुई। संचालन श्री कमल छल्लाणी जैन ने किया। अंततः पूज्य महासती डॉ. आदर्श ज्योति जी म. ने पधारकर मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। प्रेषक : गौतमचंद दुग्गड जैन, चेन्नई



श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

कश्मीर से कन्याकुमारी तक गूंजा 'अहिंसा और नशा-मुक्ति' का शंखनाद


लाल चौक, श्रीनगर, कश्मीर


डेरावाल नगर (दिल्ली


बेंगलुरु (कर्नाटक


बेंगलुरु (कर्नाटक


हैदराबाद (तेलंगाना


इंदौर (मध्य प्रदेश


गोल्फ लिंक, लुधियाना (पंजाब


रोपड (पंजाब


नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश


चेन्नई (तमिलनाडु


रोहिणी (दिल्ली


सिविल लाइंस, लुधियाना (पंजाब


प्राचीन गौशाला, लुधियाना (पंजाब


नादौन (हिमाचल प्रदेश


बठिंडा (पंजाब


पानीपत (हरियाणा


शालीमार बाग (दिल्ली


अरिहंत नगर (दिल्ली


पश्चिम विहार (दिल्ली


चेन्नई (तमिलनाडु

नई दिल्ली : श्रमण संघ की स्थापना के 75वें स्वर्णिम एवं ऐतिहासिक वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 'श्रमण संघीय अमृत महोत्सव' के अंतर्गत श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन के दिशा-निर्देशन में राष्ट्रीय युवा शाखा द्वारा राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन के कुशल नेतृत्व में संपूर्ण भारतवर्ष में एक अभूतपूर्व एवं राष्ट्रव्यापी 'अहिंसा एवं नशा मुक्ति अभियान' का गरिमामय आयोजन किया गया। 28 सितंबर 2026 से 04 अक्टूबर 2026 तक संचालित इस व्यापक जन-आंदोलन का मुख्य ध्येय समाज में नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना, अहिंसा के सिद्धांतों का प्रसार तथा सप्त कुव्यसनों व नशाखोरी का जड़ से उन्मूलन करना था।

प्रारंभ में संगठन द्वारा देशभर के 13 राज्यों में 75 अहिंसा रैलियों के आयोजन का संकल्प लिया गया था, किंतु जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय, प्रांतीय, जिला एवं स्थानीय युवा व महिला इकाइयों के अपार उत्साह एवं सामाजिक प्रतिबद्धता के फलस्वरूप संकल्प से कहीं आगे बढ़ते हुए देश के कोने-कोने में लगभग 100 से भी अधिक रैलियों, विशाल पदयात्राओं, कार व बाइक रैलियों तथा नशा-मुक्ति चेतना सभाओं एवं नशामुक्ति शपथ का ऐतिहासिक संयोजन संपन्न हुआ।

इस अहिंसा रैली अभियान में देशभर के 13 राज्यों - जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, गुजरात एवं पश्चिम बंगाल में युवा, महिला एवं स्थानीय इकाइयों ने सक्रिय सहभागिता की। श्रीनगर के लाल चौक पर रैली विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। कर्नाटक के 13 से अधिक जिलों, चेन्नई के मरीना बीच तथा महाराष्ट्र के मुंबई, पुणे, छत्रपति संभाजीनगर, खामगांव और मालेगांव में जन-जागरण हुआ। तेलंगाना-आंध्र प्रदेश में 200 से अधिक वाहनों की कार रैली निकाली गई।

भारत की विविध शैक्षणिक संस्था, मल्टीनेशनल कंपनियों सहित प्रशासनिक कार्यालयों द्वारा भी बड़े उत्साह के साथ इस अभियान में सहभागिता की। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के पूर्व चीफ श्री समित वानखेड़े ब्रांड एम्बेसडर रहे और केन्द्र सरकार के सामाजिक न्याय मंत्रालय से माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री रामदास आठवले ने इस अभियान की सराहना की।

अभियान को प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश मुनि जी म., महासाध्वी पू. श्री महक जी म., महासती पू. श्री प्रफुल्ला जी म., पू. श्री नरेंद्रमुनि जी म. तथा महासाध्वी पू. श्री सुनिधि जी म. का सान्निध्य प्राप्त हुआ। दिल्ली में वाचनाचार्य उपाध्याय पू. श्री विशालमुनि जी म., राष्ट्रसंत प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनि जी म., उप-प्रवर्तक पू. श्री पंकजमुनि जी म., चेन्नई में पू. श्री श्रुतमुनि जी म., उग्र तपस्विनी पू. श्री चेतना जी म., उप-प्रवर्तनी महासाध्वी पू. श्री रश्मि जी म., महासाध्वी पू. डॉ. सूर्या जी म., श्री शैली जी म. ने मार्गदर्शन दिया। पंजाब में पू. श्री सुभाषमुनि जी म., पू. श्री सुंदरमुनि जी म. एवं महासाध्वी पू. श्री अर्चना जी म. का मंगलपाठ प्राप्त हुआ। अंबाला में पू. डॉ. महासाध्वी श्री सुप्रतिभा जी म., पू. श्री शुभांगी जी म. एवं पू. श्री उपलब्धि जी म. का पावन आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

रतलाम, जावरा, नाथद्वारा, उदयपुर, लुधियाना और बठिंडा, नादौन, रोपड़, नालागढ़, जावरा, जम्मू आदि सहित विभिन्न नगरों में पदयात्राओं, बाइक रैलियों, मैराथन एवं विद्यार्थी मार्च के माध्यम से अहिंसा का संदेश प्रसारित हुआ। प्रतिभागियों ने सप्त कुव्यसन त्यागने और नशामुक्त जीवन अपनाने की सामूहिक शपथ ली। अभियान ने भगवान महावीर के अहिंसा, करुणा एवं संयम के संदेश को जनमानस तक पहुँचाया।

- प्रेषक : अमित लोढ़ा जैन


जय गुरु रूप


जय गुरु मरुधर केसरी


जय गुरु सुकन

कोटिशः वंदन नमन


दानवीर सेठ स्व. श्री माणकचंद सा बोहरा


स्व. श्रीमती रूपलताजी बोहरा

HaloVerse Entertainment Pvt. Ltd. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd. Mumbai

नरेश-बबिता, हर्ष-संजना, सौ.कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन
मुंबई - जोधपुर





नरेश बोहरा जैन
कार्याध्यक्ष : श्री मरुधर केशरी पावनधाम, जैतारण (राजस्थान)
वाईस चेयरमैन - विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
Mo.: 7666540600 E-mail : jainn07@gmail.com



मृत्यु पर विजय

एक बार स्वामी रामतीर्थ विदेश गए। पहली बार उन्होंने जापान की यात्रा की। उस समय उनकी उम्र केवल तीस वर्ष थी। जिस जहाज पर वे सवार थे, उसके डेक पर टहलते हुए उन्होंने एक जापानी वृद्ध व्यक्ति को देखा। उसकी आंखें कमजोर थीं, हाथ-पांव कांपते थे और ठीक से चलने में भी उसे तकलीफ होती थी। उसकी उम्र नब्बे साल से कुछ ज्यादा ही थी।

वह वृद्ध चीनी भाषा सीख रहा था। ऐसी भाषा, जो जमीन पर बोली जाने वाली सबसे मुश्किल भाषाओं में से एक है। उसमें निष्णात होना तो दूर, उसे ठीक से जानने में ही पाँच-दस साल लग जाते हैं। नब्बे साल का वृद्ध अपनी बची-खुची क्षमताएँ समेट कर चीनी भाषा सीखने में जुटा है.... आखिर कौन-सी आशा से... दस साल भी अगर इसे निष्णात होने में लगे तो निष्णात होते-होते यह सौ साल का हो जाएगा... उसके बाद कहीं यह भाषा का उपयोग करने की स्थिति में होगा....! स्वामी रामतीर्थ आश्चर्यचकित होकर सोचते रहे और सोच-सोच कर आश्चर्यचकित होते रहे। वे देखते कि बूढ़ा चीनी भाषा सीखने में ही सुबह को शाम कर देता। रामतीर्थ देख-देख कर परेशान हो गए। एक दिन उस बूढ़े से उन्होंने पूछ ही लिया - ''आप इतने वृद्ध हैं... मालूम होता है कि नब्बे पार कर गये हैं.... चीनी सीख रहे हैं.... आखिर कब तक आप इसे सीख पाएंगे और कब इस ज्ञान का उपयोग कर पाएंगे? इस बारे में आप क्या सोचते हैं?''

उस वृद्ध ने आंखें ऊपर उठाईं और पूछा - ''तुम्हारी उम्र कितनी है?'' ''तीस वर्ष।'' रामतीर्थ ने उत्तर दिया।

वृद्ध व्यक्ति हँसने लगा। बोला - ''मैं अब समझ सकता हूँ कि हिन्दुस्तान इतना कमजोर.... इतना हारा हुआ क्यों हो गया है। भई.... सीधी-सी बात है। जब तक मैं मर नहीं जाता, तब तक मुझे जिन्दा रहना है और जिन्दा रहने का मतलब है - सीखना। नहीं तो जीना व्यर्थ हो जाएगा। जिस दिन मैं पैदा हुआ, उसी दिन यह तय हो गया था कि मरना तो एक दिन है ही। अगर मैं मृत्यु के ही ध्यान में खोया रहता तो शायद कुछ भी सीख नहीं पाता। बात यह है कि जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक पूरी तरह जिन्दा रहना चाहता हूँ और पूरी तरह जिन्दा वही रह सकता है, जो अपने जीवन के एक-एक पल का... एक-एक क्षण का उपयोग करे।''

स्वामी रामतीर्थ सुनकर अवाक् रह गए। इस तरह मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाले वृद्ध व्यक्ति को वे अपलक देखते रहे।

जीवन-भर जीते रहना हँसी-खेल नहीं। यह तभी संभव है, जब मनुष्य अपनी जिज्ञासा निरन्तर बनाये रखे। जिज्ञासा को अपने आचरण में निष्ठापूर्वक साकार करता रहे। इस तरह शून्य के रूप में जीवन को धीरे-धीरे ग्रसती मृत्यु को अंगूठा दिखाता रहे। भरता रहे अपना खालीपन।

श्रमण संघीय पूज्य संत परंपरा के दुर्लभ चित्र श्रृंखला...



चित्र परिचय

यह ऐतिहासिक तस्वीर 16 सितंबर 1947 में भारत के विभाजन के समय की है, जब पंजाब (अब पाकिस्तान का हिस्सा) से जैन साधुओं को हवाई जहाज के जरिए सुरक्षित नई दिल्ली हवाई अड्डा लाया गया था।

विभाजन के दौरान फैली हिंसा से बचाकर लाए गए स्थानकवासी जैन मुनि श्री फूलचंद जी महाराज (गुड़गांव वाले) अपने दीक्षित एवं वैरागी शिष्य के साथ हवाई जहाज की सीढ़ियों से नीचे उतर रहे हैं। उनके चेहरों पर जैन परंपरा के अनुसार 'मुंहपट्टी' बंधी हुई है और वे अपने हाथों में अत्यंत सीमित सामग्री कास्ठपात्र, हस्तलिखित पांडुलिपि शास्त्र इत्यादि की पोटली लिए हुए हैं।

यह दुर्लभ चित्र विभाजन के उस दर्दनाक दौर को दर्शाता है, जब न केवल आम लोग बल्कि अध्यात्म और अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले जैन संतों को भी विवश होकर चातुर्मास स्थल छोड़कर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस और संघ के निवेदन पर वायुयान द्वारा भारत में लौटना पड़ा था।

संदर्भ-शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत

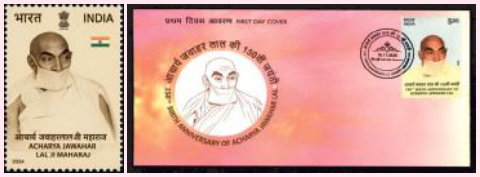
भारतीय डाक टिकटों में जैन गौरव की अनुभूतियाँ...

समाज-सुधारक आचार्य श्री जवाहर लाल जी महाराज ! - खुशबू जैन

भारतीय डाक टिकटों में जैन संत-परंपरा के गौरवशाली महापुरुषों को राष्ट्रीय सम्मान मिलने की परंपरा में एक महत्वपूर्ण अध्याय तब जुड़ा, जब स्वतंत्रता सेनानी, समाज-सुधारक एवं महान जैन संत आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज की 150वीं जयंती के अवसर पर भारत सरकार के डाक विभाग ने 16 नवंबर 2025 को रुपये 5 मूल्यवर्ग का स्मारक डाक टिकट जारी किया। इसी अवसर पर रुपये 150 मूल्यवर्ग का स्मारक सिक्का भी जारी किया गया।

आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज का जन्म 2 नवंबर 1875 को थांदला (मध्य प्रदेश) में हुआ था। वे केवल आध्यात्मिक संत और प्रखर प्रवचनकार ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जागरण, सत्य, अहिंसा और नैतिक मूल्यों के प्रबल समर्थक थे। उनके व्यक्तित्व और विचारों का प्रभाव स्वतंत्रता आंदोलन के दौर के अनेक राष्ट्रीय नेताओं तक पहुँचा। 10 जुलाई 1943 को राजस्थान के भीनासर में उनका देहावसान हुआ।

यह बहुरंगी स्मारक डाक टिकट आचार्य श्री के 150वें जन्म जयंती वर्ष को समर्पित है। उपलब्ध फिलाटेलिक विवरण के अनुसार



इसका मूल्य रुपये 5 और इसकी 3,04,560 प्रतियाँ मुद्रित की गई। इस स्मारक निर्गम के साथ प्रथम दिवस आवरण एवं विशेष रद्दीकरण भी फिलाटेलिक धरोहर का हिस्सा हैं।

आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज पर जारी यह डाक टिकट केवल एक डाक-चिह्न नहीं, बल्कि जैन संत-परंपरा की राष्ट्रीय चेतना, त्याग, तप, सत्य और अहिंसा की विरासत का दस्तावेज है। भारतीय डाक विभाग द्वारा उनके व्यक्तित्व को राष्ट्रीय स्मृति में स्थान दिया जाना इस बात का प्रमाण है कि संतों की आध्यात्मिक साधना जब समाज और राष्ट्र के नैतिक जागरण से जुड़ती है, तो वह इतिहास की अमूल्य धरोहर बन जाती है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') आज जरूरत किसी एक संप्रदाय की विजय की नहीं, जैन समाज की प्रतिष्ठा की रक्षा की है। क्यों न श्वेतांबर और दिगंबर परंपराओं के शीर्षस्थ आचार्यों, साधु-साध्वी प्रतिनिधियों, विद्वानों और वरिष्ठ सामाजिक नेतृत्व की एक सर्वमान्य जैन तीर्थ समन्वय समिति बनाई जाए, जो ऐसे विवादों का समाधान अदालत की चौखट पर पहुँचने से पहले संवाद और प्रमाण के आधार पर खोजे?

महावीर के नाम पर खड़े तीर्थ हमारी सामूहिक विरासत हैं, किसी संप्रदाय की विजय-भूमि नहीं और स्थानकवासी समाज भी इन विवादों से अछूता नहीं रह सकता क्योंकि जैन समाज की प्रतिष्ठा में हमारी प्रतिष्ठा भी निहित है इसलिए यह टिप्पणी किसी पक्ष के समर्थन में नहीं, जैन एकता के समर्थन में है।

अनेकांत केवल शास्त्रों में पढ़ने की चीज नहीं है, उसे अपने व्यवहार में उतारना होगा।



प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

गुरु अमर संयम अमृत महामहोत्सव समापन अवसर पर 2151 सजोड़े विश्व शान्ति जप अनुष्ठान

गुरु आत्म-शुक्ल-पद्म-शिव-महेन्द्र-पंकज-वरुण जन्म व दीक्षा जयन्ती



दिल्ली : राष्ट्रसंत, आत्मकुल दिवाकर, सेवा सुमेरु, उप-प्रवर्तक गुरुदेव श्री पंकज मुनि जी म. की शुभ निश्रा एवं ओजस्वी प्रवचनकार गुरुदेव डॉ. वरुण मुनि जी म. की मंगलमय सद्प्रेरणा से 4 अक्टूबर को सांवरिया सेठ टैन्ट, जापानी पार्क, रोहिणी, दिल्ली में श्री एस. एस. जैन सभा सैक्टर 5-6 रोहिणी के तत्वावधान में गुरु अमर संयम अमृत महामहोत्सव समापन अवसर पर विश्व शान्ति की मंगल कामना को लेकर 2151 जोड़ों द्वारा जप अनुष्ठान, गुरु आत्म-शुक्ल-पद्म-शिव-अमर-महेन्द्र-पंकज-वरुण जन्म एवं दीक्षा जयन्ती, गुरु गुणानुवाद, आगम विमोचन व दरबार अनावरण कार्यक्रमों का एक अनुशासित एवं भव्यातिभव्य आयोजन, विशाल संख्या में उपस्थित श्रावक - श्राविकाओं द्वारा गुरु चरणों में श्रद्धाओं का अर्घ्य अर्पित करते हुए मनाया गया।

कार्यक्रम में ध्वजारोहण के बाद सैक्टर 5-6 रोहिणी श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री रामनिवास जैन द्वारा कार्यक्रम में पधारे सभी महानुभावों का शाब्दिक स्वागत-अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रसंत, विद्या वाचस्पति, उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव श्री सुभद्र मुनि जी म. ने गुरु पद्म-अमर परिवार के बारे में बोलते हुए श्री अमर मुनि जी म. के साथ अपनी अंतरंग मैत्री के बारे में बताते हुए उनके व्यवहारिक गुणों की चर्चा की तथा उन्हें विलक्षण एवं प्रभावशाली श्रमण बताया जिन्होंने अपने श्रमण जीवन में हमेशा अनुशासन को अपनाए रखा। परम श्रद्धेय वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर डॉ. विशाल मुनि जी म. ने श्रुताचार्य श्री अमर मुनि जी म. के जीवन प्रसंगों का स्मरण करते हुए जहाँ प्रथम आचार्य श्री आत्माराम जी म., प्रथम पंजाब युवाचार्य बने श्रद्धेय श्री शुक्ल चन्द जी म., भंडारी श्री पद्मचन्द्र जी म. आदि के बारे में बोलते हुए श्री अमर मुनि जी म. को इस सदी का ऐसा साधक बताया जिन्होंने न केवल 32 जैन आगमों का अध्ययन किया अपितु उन्हें सरल भाषा में अनुवाद करके आम श्रावक-श्राविकाओं तक पहुंचाया।

इस अवसर पर उपस्थित राष्ट्रसंत, प्रज्ञा महर्षि पंडित रत्न श्री उपेन्द्र मुनि जी म., मधुर वक्ता श्री रितेश मुनि जी म., प्रवचनकार श्री सुखदर्शन मुनि जी म. ने भी अपने उद्बोधन में गुरु पद्म-अमर के श्रमणसंघ में दिए गए योगदान का स्मरण करते हुए, उन्हें सदी का विलक्षण श्रमण बताया।

कार्यक्रम में उपस्थित महासाध्वी वृन्द में दिव्य साधिका, जिनशासन प्रभाविका महासाध्वी डॉ. रश्मि जी म., महासाध्वी डॉ. शिवा जी म., आगम ज्ञानार्थी महासाध्वी डॉ. शैली जी म., महासाध्वी श्री रिद्धि-श्री मिताली जी म., साध्वी श्री मैत्री जी म. आदि ठाणा ने भी पूज्य श्रुताचार्य श्री अमर मुनि जी म. के जीवन से जुड़े अनेक प्रसंगों को याद करते हुए अपनी भावनाएँ प्रवचन एवं भजनों के द्वारा गुरु चरणों में अर्पित-समर्पित की।

जाप से पूर्व जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन ने जहाँ पूज्य गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म. का स्मरण किया वहीं सभी संतो के प्रति अपने श्रद्धाभाव अर्पित किए तथा उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा वर्तमान में समाजहित में लिए गए कुछ निर्णयों का भी जिक्र करते हुए वर्ष 2052 के विजन का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्री विजय जैन, रा. कार्याध्यक्ष श्री जसवन्त जैन, रा. उपाध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद जैन जी (रिण्ढाणा), राष्ट्रीय मुख्य समन्वयक श्री प्रशान्त जैन 'गांधरा', राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री रजनीश जैन 'राज', राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सन्तोष जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, ज्ञानप्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश कुमार जैन, श्रावक समिति के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्नालाल जैन, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन आदि महानुभावों की उपस्थिति भी उत्साहजनक रही।

लगभग छः घंटे तक चले इस कार्यक्रम के प्रति अपार उत्साह व रोमांच उपस्थित श्रद्धालुओं में निरन्तर बना रहा और स्पष्ट रूप से गुरु पद्म-अमर श्रमण परिवार के प्रति अपनी निष्ठा का दर्शन कराया।

- प्रेषक रामनिवास जैन, प्रधान

स्मृति शेष श्रद्धांजलि



श्रीमान् मुकेश कुमार रांका जैन का स्वर्गवास

सूरत (गुजरात) : सगरेव निवासी, चलथान प्रवासी श्रीमान् मुकेश कुमार रांका जैन उम्र (64वर्ष) का दुःखद अवसान दिनांक 05-10-26 को हो गया।

प्रेषक : रांका परिवार, (चलथान)



सुश्रावक श्री कांतिलाल भंडारी जैन का स्वर्गवास

नासिक (महाराष्ट्र) : धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री कांतिलाल भंडारी जैन का आकस्मिक स्वर्गवास 5/10/2026 सोमवार को हो गया।

प्रेषक : भंडारी एवं सांखला परिवार, सिडको नासिक



श्री मनोहर सिंह पीपाड़ा जैन का स्वर्गवास

मांडलगढ़ (राजस्थान) : सुश्रावक श्रीमान मनोहर सिंह पीपाड़ा जैन का आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 4.10.2026 को हो गया। प्रेषक : पीपाड़ा परिवार



श्री रमेशलाल गांधी जैन का स्वर्गवास

पुणे (महाराष्ट्र) : श्री अभय रमेशलाल गांधी जैन के पिताजी श्री रमेशलालजी शंकरलालजी गांधी जैन का 64 वर्ष की उम्र में आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 06.10.206 को हो गया। प्रेषक : गांधी परिवार, पुणे (सोनईवाला)

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

महिला जगत

महिला शाखा द्वारा गुरु दर्शन वंदन नमन यात्रा

दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन के नेतृत्व में जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा एवं प्रांतीय महिला शाखा ने श्री वर्धमान जैन महिला संघ दिल्ली में गुरु भगवंतो के दर्शनों कर संवत्सरी संबंधी क्षमा याचना की। सर्वप्रथम पश्चिम विहार में विराजित वरिष्ठ उपाध्याय, वाचनाचार्य, नेपाल हिंद गौरव पूज्य श्री विशाल मुनि जी म. आदि ठाणे के दर्शन एवं प्रवचनों का लाभ लिया एवं श्री भक्तांबर स्त्रोत का जाप किया। इसके उपरांत अरिहंत नगर में विराजित परम विदुषी साध्वी श्री किरण जी म. आदि ठाणे के दर्शन किए।

तदुपरांत त्रिनगर में विराजित पूज्य श्री उपेंद्रमुनि जी म. आदि ठाणे के दर्शन किए। केशवपुरम में विराजित महासाध्वी श्री संगीत जी म. आदि ठाणे के दर्शनों किए। डेरावालनगर में विराजित परम विदुषी दिव्य साधिका श्री रश्मि जी म. आदि ठाणे के दर्शन किए। मॉडल टाउन में विराजित महासाध्वी श्री मनीषा जी म. के दर्शन किए। प्रशांत विहार में विराजित महासाध्वी श्री संयम कमल प्रभा जी म. की सुशिष्या साध्वी श्री सुभद्र जी महाराज के दर्शन किए। त्रिनगर में विराजित प्रज्ञा महर्षि, पू. श्री उपेन्द्रमुनि जी म. के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। केशवपुरम में विराजित महासाध्वी पू. श्री संगीत जी म. आदि ठाणे के दर्शन, वंदन किए। प्रेषक : संतोष जैन

मानव मिलन के 32वें स्थापना दिवस पर विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन

100 के करीब रक्तदाताओं ने किया रक्तदान, दिया जीवन बचाने का संदेश

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : मानव मिलन के 32वें स्थापना दिवस के अवसर पर नवगठित मानव मिलन दुर्ग शाखा द्वारा जय आनंद मधुकर रतन भवन, बांधा तालाब, दुर्ग में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।



मानव मिलन के संस्थापक नेपाल केसरी राष्ट्रसंत श्री मणिभद्र मुनि जी महाराज के पावन सानिध्य एवं आशीर्वाद में आयोजित इस रक्तदान शिविर में विभिन्न आयु वर्ग के लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रक्तदान को मानव सेवा का श्रेष्ठ माध्यम मानते हुए बड़ी संख्या में समाजजनों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

इस अवसर पर मानव मिलन के संस्थापक राष्ट्र संत श्री मणिभद्र मुनि जी महाराज ने रक्तदान करने वाले दाताओं को संबोधित करते हुए कहा कि मानव कल्याणकारी और जीवन दान देने में यह सेवा सबसे उत्तम सेवा है। शिविर में 100 के करीब रक्तदाताओं ने रक्तदान कर जरूरतमंद मरीजों के जीवन की रक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। रक्तदाताओं ने कहा कि रक्तदान महादान है और हमारे द्वारा दिया गया रक्त किसी अनजान व्यक्ति के जीवन को बचाने का माध्यम बन सकता है। प्रेषक : नवीन संचेती जैन

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain



R. Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
सदस्य - विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस
Mob.: 9444204046 E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
vannalaya POLUR SIRUVANAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR



M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

जन्मोत्सव गुणगान का नहीं, माता-पिता, गुरु और समाज के प्रति कृतज्ञता का अवसर : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

श्रमणसंघ की भावना 'ओ पॉजिटिव', जिनशासन की सेवा करने वाले सभी अपने, नई पीढ़ी के लिए साझा मंच और बुजुर्गों के लिए 'स्वाश्रय' की पहल 60वें जन्मोत्सव पर युवाचार्यश्रीजी व 36 उपवास की तपस्विनी साध्वी वैभवश्रीजी का अभिनंदन, देशभर से पहुंचे हजारों गुरुभक्त









भीलवाड़ा (राजस्थान) : जन्मोत्सव स्वयं के गुणगान का नहीं, जीवन को संस्कार देने वाले माता-पिता, सद्बुद्धि देने वाले गुरु और हर कदम पर साथ खड़े समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है। माता-पिता ने मेरे भीतर गुरु भक्ति का बीज बोया और गुरु आनन्द ने बाल बुद्धि को सद्बुद्धि देकर विवेक का दीपक प्रज्वलित किया। आज भी गुरु चरणों में मेरी प्रार्थना यही है-"गुरुदेव, सद्बुद्धि देना और उस सद्बुद्धि के अनुसार कार्य करने की शक्ति देना, बाकी पुरुषार्थ हम कर लेंगे। ये विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्रऋषिजी म. ने शांतिभवन में अपने 60वें जन्मोत्सव समारोह में कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहे। युवाचार्यश्री ने श्रमण संघ की व्यापक भावना को 'ओ पॉजिटिव' की उपमा देते हुए कहा कि जिस तरह रक्त का अपना समूह होता है, उसी तरह हमारी पहचान श्रमण संघ है, लेकिन यह पहचान किसी को अलग करने के लिए नहीं, जिनशासन की सेवा करने वाले सभी को अपना मानने के लिए है। जिनशासन की प्रभावना और सेवा में जो भी लगा है, उसके प्रति सम्मान और सहयोग का भाव रखना हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा जो तेरा-मेरा करे वह हमारा नहीं, जो 'हमारा' कहे वही श्रमण संघ की भावना है।

उन्होंने कहा कि श्रमण संघ के खुलेपन का अर्थ मर्यादाहीनता नहीं है। संघ की अपनी संयम मर्यादाएं और समाचारी हैं। खुलापन छल-कपट से मुक्त पारदर्शिता है, मनमानी नहीं। अपनी परंपरा के प्रति आस्था रखते हुए दूसरी जैन परंपराओं का सम्मान करना चाहिए और ऐसी किसी बात को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए जो संयम-मर्यादा या परस्पर सम्मान के विरुद्ध हो। धार्मिक आयोजनों की सफलता को केवल भीड़ और बड़े कार्यक्रमों से आंकने की प्रवृत्ति पर युवाचार्यश्री ने कहा कि यह देखना अधिक महत्वपूर्ण है कि धर्मसभा में सुना गया विचार जीवन में कितना उतर रहा है। संघ की प्रत्येक जिम्मेदारी आचार्य या संतों पर डाल देने से काम नहीं चलेगा, श्रावक समाज को भी अपनी भूमिका समझनी होगी।

नई पीढ़ी को श्रमणसंघ से जोड़ने के लिए युवाचार्यश्री ने युवक-युवतियों का साझा मंच तैयार करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि पाठशाला से आगे निकलने वाली पीढ़ी को संगठित रूप से संघ से जोड़ना होगा। देशभर में फैले श्रमण संघ के संपर्क तंत्र से जुड़ने पर युवाओं को सामाजिक पहचान के साथ शिक्षा, रोजगार एवं आवश्यकता के अन्य अवसरों पर समाज का सहयोग मिल सकेगा। युवा वर्ग इसमें एक-दूसरे का सहयोगी और मार्गदर्शक बन सकता है। उन्होंने कहा कि मजबूत तंत्र हमारे पास पहले से है, आवश्यकता उसे सक्रिय कर नई पीढ़ी को उससे जोड़ने की है।

भीलवाड़ा और आस-पास करीब सौ किलोमीटर क्षेत्र में ऐसे बुजुर्गों के लिए बेहतर रहने-खाने की व्यवस्था और आत्मीय वातावरण वाला स्थान विकसित होना चाहिए, जहाँ वे जीवन का उत्तरार्ध सम्मान और प्रसन्नता के साथ बिता सकें। इसमें किसी व्यक्ति का नाम या श्रेय नहीं, बुजुर्गों की आवश्यकता महत्वपूर्ण होनी चाहिए।

युवाचार्यश्री ने आचार्य शिवमुनिजी के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त करते हुए संत-साध्वीवृंद, देश के विभिन्न क्षेत्रों से पहुँचे हजारों गुरुभक्तों और आयोजन में सहयोग करने वाले सभी लोगों के प्रति आभार जताया। शांतिभवन श्रीसंघ, श्री महावीर युवक मंडल सेवा संस्थान, श्री शांति जैन महिला मंडल एवं विभिन्न सेवा संगठनों के कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने तपस्विनी साध्वी वैभवश्रीजी की 36 उपवास की तपस्या की अनुमोदना की और तप की सुखपूर्वक पूर्णता के लिए मंगलकामना व्यक्त की।

इस अवसर पर तेरापंथ आचार्य महाश्रमण के आज्ञानुवर्ती मुनि यशवंत कुमारजी, विदुषी ज्ञानकंवरजी, यशोदीप्ति मधुकंवरजी, उपप्रवर्तिनी दिव्यज्योतिजी, महासती सुचेताजी, स्मितभाषी पियूषदर्शनाजी सहित संत-साध्वीवृंद ने विचार व्यक्त करते हुए युवाचार्य महेन्द्रऋषिजी के व्यक्तित्व, संघ सेवा और जिनशासन प्रभावना का उल्लेख कर 60वें जन्मोत्सव पर उनका अभिनंदन किया। तपस्विनी साध्वी वैभवश्रीजी की 36 उपवास की तपस्या का भी अभिनंदन किया गया।

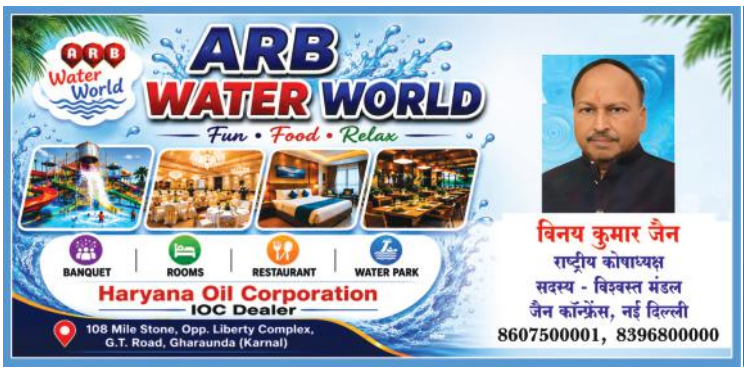
शांतिभवन आनन्द अनुभूति वर्षावास के संरक्षक नवरतनमल बंब जैन, अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद चीपड़ जैन, संयोजक कंवरलाल सूरिया जैन, मंत्री नवरतनमल भलावत जैन, मदनलाल चोरड़िया जैन, सुशील चपलोत, प्रकाश पीपाड़ा, नरेन्द्र भंडारी, बाबूलाल सूरिया, श्री महावीर युवक मंडल अध्यक्ष मनीष कोठारी, हुक्मीचंद खटोड़ तथा श्री शांति जैन महिला मंडल की सिम्मी पोखरणा, बलवीर देवी चोरड़िया, प्रमिला सूरिया, प्रमिला कोटिचा, पुष्पा गौखरू और नीता बाबेल सहित पदाधिकारियों ने युवाचार्यश्री का अभिनंदन कर श्रीसंघ की ओर से अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

श्री जसवंत जैन ने जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से युवाचार्यश्री की षष्टीपूर्ति बधाइ एवं शुभकामनाएं प्रदान करते हुए आचार्यश्री जी द्वारा उनके आगामी वर्ष के चातुर्मास को अरिहंतनगर दिल्ली में घोषणा किए जाने कृतज्ञता ज्ञापित की।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस विश्वस्त मण्डल के वाईस चेयरमैन श्री नरेश बोहरा जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री महेश डाकोलिया जैन, ज्ञान प्रकाश योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष श्री मुनीष जैन आदि अनेकों पदाधिकारियों के साथ विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी युवाचार्यश्री को मंगलकामनाएं दी।

जन्मोत्सव समारोह में दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु और बंगाल सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों से श्रीसंघों के प्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं शामिल हुए। समस्त गौतम प्रसादी के लाभार्थी सूरिया परिवार का श्रीसंघ की ओर से स्वागत किया गया।

प्रेषक : सुनील चपलोत जैन





श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 08-10-2026
Date of Posting : 14/15-10-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 30 ✲ पृष्ठ : 8
माह : अक्टूबर ✲ सप्ताह : 08 अक्टूबर से 14 अक्टूबर

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

अमृत महोत्सव : विरासत से संकल्प की ओर

– विजय जैन, चेयरमैन, विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस



श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष हमारे लिए केवल 75 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा का उत्सव नहीं, बल्कि उन पूज्य आचार्यों, संत - सतियों और समर्पित श्रावक-श्राविकाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है, जिनके तप, त्याग और पुरुषार्थ से श्रमण संघ की यह विशाल विरासत निर्मित हुई है।

हमारी सबसे बड़ी शक्ति संघीय एकता, संतों के प्रति श्रद्धा और समाज के प्रति सेवा-भाव है। समय बदलता है, पीढ़ियाँ बदलती हैं, लेकिन धर्म के शाश्वत मूल्य सदैव हमारा मार्गदर्शन करते हैं। आज आवश्यकता है कि हम अपनी नई पीढ़ी को भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह और संयम के सिद्धांतों से जोड़ें तथा उन्हें हमारी गौरवशाली श्रमण परम्परा से परिचित कराएँ।

अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित धर्म प्रभावना, सेवा, संस्कार, युवा जागरण एवं सामाजिक सरोकारों के कार्यक्रम तभी सार्थक होंगे, जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति उनमें अपनी सहभागिता सुनिश्चित करे।

आइए, इस अमृत अवसर पर हम संकल्प लें कि मतभेदों से ऊपर उठकर संघीय एकता को मजबूत करेंगे, संतों के आदर्शों को जीवन में उतारेंगे और सेवा एवं संस्कार के माध्यम से भावी पीढ़ी के लिए एक सुदृढ़ समाज का निर्माण करेंगे। यही हमारे पूर्वजों और पूज्य संतों के प्रति सच्ची श्रद्धा तथा अमृत महोत्सव वर्ष की वास्तविक उपलब्धि होगी।

पचहत्तर वर्ष : कुछ स्मृतियाँ, कुछ संकल्प और एक उज्ज्वल कल

– नरेश बोहरा जैन, वाईस चेयरमैन, विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस



कुछ यात्राएँ मील के पत्थरों से नहीं मापी जातीं, वे उन पदचिह्नों से पहचानी जाती हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए रास्ता बना जाते हैं।

श्रमण संघ की 75 वर्षों की यात्रा भी ऐसी ही एक यात्रा है। इन पचहत्तर वर्षों में समय बदला, समाज बदला, पीढ़ियाँ बदलीं, संवाद के माध्यम बदले और जीवन जीने के तौर-तरीके भी बदल गएय लेकिन जो नहीं बदला, वह है हमारी श्रमण संस्कृति का मूल स्वर-अहिंसा, संयम, साधना, सेवा और संघीय एकता।

आज जब हम श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष मना रहे हैं, तो यह केवल अतीत के गौरव पर प्रसन्न होने का अवसर नहीं है। यह थोड़ा ठहरकर स्वयं से पूछने का समय भी है-जो विरासत हमें मिली है, उसमें हम अपनी ओर से क्या जोड़कर अगली पीढ़ी को सौंपेंगे?

हमारे पूर्वाचार्यों और संत-सतियों ने हमें केवल एक संगठन नहीं दिया, उन्होंने हमें संस्कारों की वह छाया दी जिसमें न जाने कितनी पीढ़ियों ने धर्म को जाना, साधना को समझा और सेवा को जीवन का सौभाग्य माना। अब बारी हमारी है। अमृत महोत्सव की सार्थकता बड़े आयोजनों की संख्या में नहीं, बल्कि इस बात में होगी कि हम कितने युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ पाए, कितने परिवारों में स्वाध्याय का दीप जला पाए, कितने लोगों को व्यसन से दूर कर पाए, कितने जरूरतमंदों तक सेवा पहुँचा पाए और भगवान महावीर की अहिंसा को कितने हृदयों का स्वभाव बना पाए।

समय हमसे केवल उत्सव नहीं, उत्तरदायित्व माँग रहा है। हम अपने बच्चों को संपत्ति देंगे, शिक्षा देंगे, सुविधाएँ देंगे-लेकिन यदि संस्कार देना भूल गए तो शायद बहुत कुछ देकर भी सबसे मूल्यवान चीज देना भूल जाएंगे। इसलिए इस अमृत वर्ष में हमारी सबसे बड़ी साधना यही हो कि नई पीढ़ी आधुनिक भी बने और अपनी जड़ों से जुड़ी भी रहे।

विरासत वह नहीं, जिसे हम केवल संभालकर रखते हैं, विरासत वह है, जिसे हम अपने आचरण से और समृद्ध करके अगली पीढ़ी को सौंपते हैं। पचहत्तर वर्षों के इस अमृत पड़ाव पर आइए, पीछे देखकर अपने महापुरुषों के प्रति कृतज्ञ हों, वर्तमान में एक-दूसरे का हाथ थामकर चलें और भविष्य की ओर विश्वास से देखें।

आइए, ऐसा कुछ कर जाएँ कि जब श्रमण संघ की आने वाली पीढ़ियाँ इस अमृत काल को याद करें, तो वे केवल यह न कहें कि "उन्होंने 75 वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाया था," बल्कि गर्व से कहें- "उस पीढ़ी ने हमें एक और अधिक संगठित, संस्कारित, सेवाभावी और जीवंत समाज सौंपा था।"

यही अमृत महोत्सव की उपलब्धि होगी। यही हमारी संत परम्परा के प्रति कृतज्ञता होगी। और यही आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारा सच्चा उत्तरदायित्व होगा।

नई पीढ़ी को केवल परम्परा नहीं, उसका 'क्यों' भी बताइए

– नरेश आनन्द प्रकाश जैन, ज्ञान प्रकाश योजना-राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस



आज की नई पीढ़ी धर्म से दूर नहीं है, वह धर्म को समझना चाहती है। वह पूछती है - सामायिक क्यों करें? स्वाध्याय क्यों आवश्यक है? अहिंसा आज के जीवन में कैसे उपयोगी है? अपरिग्रह का आधुनिक जीवन में क्या महत्व है?

हमें इन प्रश्नों से चिंतित नहीं, प्रसन्न होना चाहिए। क्योंकि प्रश्न जिज्ञासा का संकेत है और जिज्ञासा ही ज्ञान का पहला द्वार है। श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष इस दृष्टि से हमारे लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। श्रमण संघ की 75 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा केवल इतिहास नहीं, बल्कि हमारे पूज्य आचार्यों, संत-सतियों की साधना, ज्ञान, त्याग और संस्कारों की अमूल्य धरोहर है। अमृत महोत्सव की वास्तविक सार्थकता तभी होगी, जब हम इस विरासत को नई पीढ़ी तक उसकी भाषा और उसकी जिज्ञासाओं के अनुरूप पहुँचाएँगे।

हमें बच्चों और युवाओं से केवल यह नहीं कहना चाहिए कि "ऐसा हमारी परम्परा में होता आया है", बल्कि उन्हें उसके पीछे का आध्यात्मिक और व्यावहारिक चिंतन भी समझाना चाहिए। जब युवा धर्म का मर्म समझेगा, तभी वह उसे श्रद्धा और स्वेच्छा से अपने जीवन में अपनाएगा।

ज्ञान प्रकाश योजना का उद्देश्य भी यही है कि ज्ञान केवल पुस्तकों तक सीमित न रहे, बल्कि जीवन का संस्कार बने। अमृत महोत्सव वर्ष में हम संकल्प लें कि प्रत्येक परिवार में स्वाध्याय बढ़े, धर्म पर सकारात्मक संवाद हो और नई पीढ़ी को हमारी समृद्ध श्रमण संस्कृति से जोड़ा जाए। हम अगली पीढ़ी को केवल परम्पराएँ विरासत में न दें, बल्कि उनके पीछे का ज्ञान भी दें-क्योंकि समझ से जन्मी श्रद्धा ही पीढ़ियों तक जीवित रहती है।

सेवा से सार्थक हो अमृत महोत्सव वर्ष

– सुदर्शन जैन, राष्ट्रीय जन कल्याण योजना-चेयरमैन, जैन कॉन्फ्रेंस



श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष हमारे लिए गौरव, कृतज्ञता और आत्मचिंतन का अवसर है। श्रमण संघ की 75 वर्षों की यह यात्रा संत-सतियों की साधना, श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा और समाज के सेवा-भाव से सुदृढ़ हुई है। इस ऐतिहासिक वर्ष को यदि हम जनकल्याण से जोड़ दें, तो इसकी सार्थकता और व्यापक हो जाएगी।

भगवान महावीर की अहिंसा हमें केवल किसी जीव को कष्ट न देने का संदेश नहीं देती, बल्कि पीड़ित की पीड़ा को समझने और यथासंभव उसका सहयोग करने की प्रेरणा भी देती है। जहाँ संवेदना है, वहाँ सेवा है और जहाँ निःस्वार्थ सेवा है, वहीं धर्म का वास्तविक प्रकाश है।

आज समाज में ऐसे अनेक परिवार और व्यक्ति हैं जिन्हें चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार, भोजन अथवा किसी आकस्मिक परिस्थिति में सहयोग की आवश्यकता होती है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि समाज का सक्षम वर्ग जरूरतमंद के साथ खड़ा हो। सहायता केवल आर्थिक ही नहीं होती-किसी को सही मार्गदर्शन देना, किसी विद्यार्थी की शिक्षा में सहयोग करना, रोगी के उपचार में मदद करना अथवा किसी परिवार को आत्मनिर्भर बनाने में योगदान देना भी जनकल्याण का महत्वपूर्ण स्वरूप है।

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना की भावना यही है कि सेवा व्यवस्थित हो, जरूरतमंद तक पहुँचे और उसे केवल तत्काल सहायता ही नहीं, बल्कि आगे बढ़ने का संबल भी प्रदान करे।

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष में हमें सेवा के इसी भाव को और व्यापक बनाना है। जरूरतमंद परिवारों की सहायता तथा मानव कल्याण के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अमृत महोत्सव को जन-जन के जीवन से जोड़ना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

आइए, इस अमृत महोत्सव वर्ष में हम एक संकल्प लें-हमारे उत्सव में उल्लास के साथ उपकार भी हो, धर्म के साथ सेवा भी हो और हमारी उपलब्धियों के साथ किसी जरूरतमंद के चेहरे की मुस्कान भी जुड़ी हो।

यदि अमृत महोत्सव वर्ष में हमारे प्रयासों से किसी को शिक्षा मिले, किसी रोगी को उपचार मिले, किसी परिवार को संबल मिले और किसी जरूरतमंद के जीवन में आशा का प्रकाश जले, तो यही इस ऐतिहासिक वर्ष की सबसे सुंदर उपलब्धि होगी।

"सेवा को संस्कार और जनकल्याण को संकल्प बनाएं-यही अमृत महोत्सव का सच्चा संदेश है।"



सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906